Volume-12, No. 1 Feb.-2025, pp. Hin.29-36

आगरा जनपद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

श्रीमति विनीता, शोधार्थी इतिहास विभाग
आई. आई. एम. टी. विश्वविद्यालय मेरठ उत्तर–प्रदेश भारत
डा. रेणु जैन, एसोसिएट प्रोफेसर इतिहास विभाग
आई. आई. एम. टी. विश्वविद्यालय मेरठ उत्तर–प्रदेश भारत

सार–
आगरा का आधुनिक चर्चित इतिहास सिकंदर लोदी के समय से शुरू होता है किंतु वर्तमान में हुई खोज के आधार पर इतिहास विद आगरा की प्राचीनता को अधिकतम आर्य कालीन भारत से जोड़ते हैं परंतु आगरा का अस्तित्व इससे भी कहीं अधिक पुराना है। हाल ही में मिले प्रमाण आगरा के अस्तित्व को आर्य कालीन भारत से पूर्व द्रविड़ कालीन भारत में और उससे भी पूर्व उत्तर पाषाण काल तक ले जाते हैं आगरा प्राचीन काल से ऋषियों की तपोभूमि रहा है और इसी आधार पर आगरा का नामकरण भी हुआ है। प्राचीन ग्रंथो में आगरा को अर्गलपुर लिखा है व लिखा है महर्षि अंगिरा के नाम पर आगराया अग्रवाल कहा जाता था महाभारत से पूर्व भी आगरा को अग्रवन या अग्रवाल कहा जाता था बौद्ध जैन साहित्य में आगरा जनपद का उल्लेख मिलता है आगरा में लगातार हो रहे उत्खनन से इस बात के साक्ष्य प्राप्त हो रहे हैं की आगरा का इतिहास सिकंदर लोदी द्वारा बसाई जाने से पूर्व का है ईशा की पहली शताब्दी से पूर्व भारत पर कनिष्क का आधिपत्य था। आगरा क्षेत्र भी कनिष्क के अधिकार क्षेत्र में आता था कनिष्क के शासन के समय के आगरा से प्राप्त सिक्के इस बात की पुष्टि करते हैं अतः आगरा को केवल सिकंदर लोदी या मध्यकाल से जोड़ना न्याय संगत नहीं है

मुख्य शब्द– प्राचीन कालीन आगरा, जैन साहित्य में आगरा, 14 वीं शताब्दी में आगरा

प्रस्तावना–

भारत के उत्तर प्रदेश राज्य का आगरा नगर किसी परिचय का मोहताज नहीं है। आगरा अपनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि व स्थापत्य के लिए जाना जाता है। आगरा में बनी मुगलकाल इमारतें विश्व प्रसिद्ध है। देशी और विदेशी पर्यटकों का आकर्षण केंद्र है। इन्हें देखने के लिए हर वर्ष करोड़ों लोग आगरा आते हैं।

वर्तमान आगरा प्रान्त और अवध प्रांतों को मिलाकर वर्ष 1902 में संयुक्त प्रांत बनाया गया जो उत्तर प्रदेश कहलाता है। अविभाजित आगरा मंडल सात जिलों का एक पर्यटन दृष्टि से महत्वपूर्ण मंडल है। इन जिलों में आगरा का महत्त्व विशेष है। दिल्ली और जयपुर के साथ यह पर्यटन का त्रिकोण बनाता है। यमुना नदी के किनारे बसा यह शहर अपने आंचल में आगरा किला, ताजमहल, अकबर का मकबरा और एत्माद्दौला का मकबरा जैसी ऐतिहासिक इमारतें समेटे हुए है। तथापि, आगरा का इतिहास मुगलकाल से कहीं बहुत प्राचीन था जिस पर शोध करने वाले शोधार्थियों की संख्या बढ़ती जा रही है। इस नगर का संबंध रेणुका आश्रम तथा अन्य स्रोतों के माध्यम से महाभारत काल और पौराणिक काल से स्थापित किया गया है। बाद में यह उल्लेख आता है कि महमूद गजनवी ने आगरा दुर्ग को भी पूरी तरह से बर्बाद किया था।[1]

प्राचीन कालीन आगरा

एएसआइ के अधिकारी द्वारा तैयार की गई एक रिपोर्ट में कहा गया है। सन 1959-60 ने रसूलपुर गांव में 12 चट्टानी आश्रयों की खोज की गई थी, जिन्हें चील की गुफा के नाम से भी जाना जाता है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में नियमित खनन और उत्खनन गतिविधियों के कारण केवल एक ही आश्रयस्थल बचा है। इसी कि 2004 में सुप्रीम कोर्ट ने आदेश दिया था कि आश्रयों के 10 किलोमीटर के भीतर कोई विस्फोट नही किया जाए पटसल गॉव में ये दो चट्टानी षैलाश्रय स्थल है। दक्षिण पूर्व में स्थित नाइ–की–गुफा और दक्षिण पहाड़ी की चोटी पर सीता की रसोई एक और चट्टान षैलाश्रय बारदौली गांव में पाया गया। जिसे स्थानीय रूप से रानी का खटोला कहा जाता है, जो फतेहपुर सीकरी परिसर से लगभग 14 किलोमीटर दूर है। निरीक्षण के दौरान

एएसआई अधिकारियों ने पाया की पाटसल में एक स्थान पर मानव जैसी आकृतियों के एक समूह को पगड़ी या हैंड गियर पहने खड़े स्थिति में चित्रित किया गया है। नई खोज ने। फतेहपुर सीकरी की इतिहास और प्राचीनता को बहुत पीछे धकेल दिया। आगरा पुरातत्व सर्वेक्षण आगरा सर्कल ने फतेहपुर सीकरी के आसपास 3000 साल से अधिक पुराने रॉक आश्रय स्थलों की सुरक्षा की तत्काल आवश्यकता की सिफारिश भी की है।

बोध तथा जैन साहित्य में आगरा बौद्ध और जैन के ग्रंथों में 16 जनपद का उल्लेख है। उसमें शूरसेन जनपद भी है। यूनानी लेखकों ने शूरसैन को श्रीकृष्ण का पितामह बताया है। रामायण के अनुसार, शूरसेन, शत्रुघ्न के पुत्र थे। संभव है एक शूरसेन का संबंध मथुरा से और दूसरे का शौरीपुर से है। जिसने शूरसैन नगर की नींव डाली होगी शूर सेन के पुत्र वासुदेव की पत्नी मथुरा के राजा कंस की बहन थी। वासुदेव के पुत्र श्रीकृष्ण का जन्म अपने मामा कंस के कारागार में हुआ पर श्रीकृष्ण का परिवार शूरसैन जनपद के आगरा क्षेत्र का ही था।[2]

आगरा में लगातार हो रहे उत्खनन से इस बात के साक्ष्य प्राप्त हो रहे हैं आगरा का इतिहास सिकंदर लोधी द्वारा बसाए जाने से पूर्व का हैं।

ईशा की पहली शताब्दी से पूर्व भारत पर कनिष्क का अधिपत्य था। आगरा क्षेत्र भी कनिष्क के अधिकार क्षेत्र में आता था। कनिष्क के शासन के समय के आगरा से प्राप्त सिक्के इस बात की पुष्टि करते हैं।[3]

पांचवीं शताब्दी में आगरा पांचवीं शताब्दी के चांदी के सिक्के यहाँ खुदाई में निकले हैं। इन सिक्कों पर ''गुहला श्री''। अंकित होने के कारण इनका संबंध मेवाड़ के गुहिलाश्री से जोड़ा जाता है। परन्तु इन्हें कन्नौज के गहरवाल वंश से जोड़ना अधिक तर्कसंगत प्रतीत होता है। क्योंकि आगरा के निकट चन्दावर तक उनका शासन था तथा इसी चन्दावर नामक स्थान पर सन 1194 ईस्वी में मोहम्मद गौरी ने गहड़वाल राजा जयचंद को पराजित किया था।[4]

सातवीं आठवीं शताब्दी में आगरा जनपद के बसा होने के प्रमाण के रूप में फतेहपुर सीकरी के संग्रहालय में रखी गई। नेमिनाथ यक्षिणी की प्रतिमा है। दक्षिणी अंबिका की प्रतिमा लाल बलुई पत्थर से निर्मित है और यहीं पर 11वीं शताब्दी की जैन सरस्वती की प्रतिमा सबसे आकर्षक है। जिसे देखने के लिए हर साल पर्यटक आते हैं। एएसआई द्वारा इसी प्रतिमा की रेप्लिका तोहफे के रूप में भ्रमण करने आने वाले वीआईपी पर्यटकों को दी जाती है। और यहाँ पर तीर्थंकर आदिनाथ संभवनाथ की प्रतिमाएं, मिट्टी की बनी मूर्ति, सातवीं से सत्रहवीं शताब्दी की धातु से बनी वस्तुएं कुषाण काल के मृदभांड भी प्रदर्शित किए जाते हैं। प्रत्येक अवशेषों के साथ लगे नोट्स के माध्यम से ही पर्यटक इनके बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं।[5]

14 वीं शताब्दी में आगरा के निकट स्थित जलेसर का उल्लेख मोहम्मद बिन तुगलक के समय आए चर्चित यात्री इब्नबतूता ने अपनी पुस्तक रेहला में किया है, जो 14 सितंबर सन 1342 को जलेसर पहुंचा था। जलेसर से उसने ग्वालियर प्रस्थान किया।[6]

15 वीं शताब्दी के प्रारंभ में, सैय्यद वंश के संस्थापक खिज्र खॉ ने अपने सिपहसालार मलिक ताज उल मुल्क को इटावा पर हमले के लिए भेजा था। ताज उल मुल्क ने मार्ग में पड़े चंदावर को लूट लिया था। इसी वक्त इटावा के सुल्तान हुसैन की माता राजी बेगम का इंतकाल हुआ था। तब दुख व्यक्त करने ग्वालियर का राजकुमार कल्याण मल आगरा होते हुए इटावा गया था। चंद्रवार का कुतुब खा लोधी भी इस कार्य से इटावा रवाना हुआ था।[7]

हिंदू लोक कथाओं के अनुसार कहा जाता है कि आगरा वह क्षेत्र है। जहाँ हमारे गौरवपूर्ण अतीत के यथार्थ यह विश्वकोष महाभारत के रचियता प्रसिद्ध श्री वेदव्यास का जन्म हुआ था। महाभारत के रचियता प्रसिद्ध श्री वेदव्यास कवि होने के साथ साथ शिक्षक भी थे तथा परशुराम के रूप में विष्णु भगवान का अवतार लेने का स्थान माना जाने के कारण आगरा के प्रति हिंदुओं की अगाध श्रद्धा हैं। श्री कृष्ण का पवित्र ब्रजमंडल के अनेक क्षेत्रों में से आगरा प्रथम था। यहीं पर श्री कृष्ण ग्वालों के साथ अपनी बंसी बजाते हुए। और उस अपूर्व संगीत की रचना करते हुए विचरण किया करते थे। बांसुरी की धुन सुनने वालों को मोहित कर लेते थे। कुछ प्राचीन भवन अवशेष आगरा की प्राचीनता का साक्ष्य है। इन मंदिरों के खंडहर में आज भी मिलते है। और एतमादपुर तथा चम्बल नदी के किनारे वाले स्थानों में बौद्ध काल की रचनाओं के अवशेष पाए गए हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि इन प्राचीन स्थान का उन शक्तिशाली राजाओं के राज्य का भाग रहा होगा, जिनकी राजधानी मथुरा थी।[8]

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में आगरा का महत्वपूर्ण स्थान है। समय की गतिशीलता के कारण प्रत्येक देश तथा नगर की स्थिति में परिवर्तन आता है। परंतु कुछ ऐसे सौभाग्यशाली नगर भी हैं जिनकी ऐतिहासिकता थोड़ा बहुत परिवर्तन के साथ सदियों से बनी हुई है। ऐसे नगरों की ऐतिहासिक संस्कृति सामाजिक तानाबाना कुछ इस प्रकार गुथा हुआ है। सदियाँ बीतने पर भी उनकी स्याही फीकी नहीं पड़ी। आगरा नगर की यही ऐतिहासिक धरोहर तथा खूबसूरत इमारत अपनी विशिष्ट शैली के लिए विश्व विख्यात है।[9]

1. **अग्रगामियों के राजा का नाम** अग्रराज था तथा उसी के नाम पर आगरा नाम पड़ा। कार्लायल के अनुसार आगरा की स्थापना सन 95 ईस्वी में। राजा गज ने की थी। आगरा महाकाव्य काल में राजा कंश के समय एक शक्तिशाली प्रशासनिक राजनैतिक केंद्र था। यहाँ के किलों में वह राजनैतिक बन्दियों को रखता था। कंस के समय आगरा एक समृद्ध नगर था जिसकी ख्याति दूर–दूर तक फैली थी। आगरा भौगोलिक स्थिति में मथुरा से अभिन्न रूप से संबंधित था। साथ ही यह बात भी स्पष्ट होती है कि राजा कंस से पूर्व भी यह एक महत्वपूर्ण आबादी वाला क्षेत्र था। क्योंकि अचानक ही स्थान का चयन कुछ असंभव प्रतीत होता है। हवेनसांग ने मथुरा राज्य का क्षेत्रफल 5000 किलोमीटर (833 मील) के लगभग बताया है। मथुरा को केंद्र मानकर 84 कोस मंडलाकार क्षेत्र ब्रज प्रदेश कहलाता है। इसके अंतर्गत स्थित होने के कारण आगरा का ब्रज प्रदेश में होना निश्चित है।[10]

   सांस्कृतिक दृष्टि से आगरा विस्तृत ब्रज मंडल का एक मुख्य अंग है, जिसका क्षेत्र बुलंदशहर के जाजऊ से बटेश्वर तक हसायन या हसनगढ़ से पश्चिम में पहाड़ी जिले भरतपुर तक फैला है।

2. भाषाई आधार पर भी आगरा बृज क्षेत्र ही हैं। ब्रज भाषा का विस्तार। दूर दूर तक फैला है। ब्रज भाषा विशुद्ध रूप से उत्तर प्रदेश के मथुरा, अलीगढ़ और आगरा तथा राजस्थान के भरतपुर और धौलपुर जिले में बोली जाती है। मथुरा आगरा व अलीगढ़ को केंद्र मान लिया जाए तो उत्तर में अल्मोड़ा, नैनीताल तथा बिजनौर जिले तक ब्रज भाषा का क्षेत्र फैला है। वास्तव में ब्रज भाषा क्षेत्र मुगलकालीन संपूर्ण आगरा प्रांत का केंद्रबिंदु रही है। जिसकी सीमा एक ओर दोआब तक एवं दूसरी ओर अरावली पर्वत श्रेणी तक फैली है। इस प्रकार से राजनैतिक, सांस्कृतिक तथा भाषाई आधार पर आगरा तथा ब्रज का बहुत गहरा संबंध है।

   प्राचीन काल के आगरा तथा सिकंदर लोदी के काल के आगरा से लेकर मुगलकाल तक आगरा के परिवर्तन तथा विकास के विविध आयाम रहे हैं। पहली बार सिकंदर लोधी के समय शहर को प्रधानता प्राप्त हुई तथा आगरा, भारत के विभिन्न शहरों में विशिष्ट स्थान प्राप्त करने में सफल रहा।

3. पूरे विश्व में प्रसिद्ध आगरा नगर के नामांकन की समस्या का कोई अंतिम समाधान अभी तक नहीं प्राप्त हुआ है। क्योंकि इस संबंध में इतिहासकारों के विचारों में अभी तक परस्पर सहमति नहीं है, मतभेद हैं। इस संबंध में विभिन्न तथ्य प्रचलित है। प्राचीन समय में आगरा जयप्रस्थ के नाम से भी प्रसिद्ध था। क्योंकि यह राजा यमराज की राजधानी थी इससे केवल राजनैतिक महत्ता सिद्ध होती है।[11]

4. मध्यकालीन संस्कृत साहित्य में प्रयोग अंगलपुर। नाम आगरा के लिए है तथा संस्कृत साहित्य में ही आगरा के लिए अग्रसैन पुर नाम का प्रयोग हुआ है।[12]

5. कहा जाता है आगरा शब्द अगर से बना है, जिसका अर्थ नमक है। आगरा के आसपास के क्षेत्र में नमक तथा शोरा प्राप्त होने के उल्लेख मिलते हैं। आगरा से थोड़ी दूर आगरा अलीगढ़ मार्ग पर सादाबाद शोरा पाए जाने का वर्णन मिलता है। एक दूसरा उल्लेख मिलता है जिसके अनुसार आगरा में वणिकों की संख्या अधिक थी। इस कारण भी इसका नाम आगरा पड़ा।

6. राजनैतिक, प्रशासनिक तथा सैनिक आवश्यकताओं के आधार पर दिल्ली से दक्षिण पूर्व में सिकंदर लोदी सर्वेक्षण के उद्देश्य से नाव में बैठकर दिल्ली से मथुरा के लिए चला। मथुरा से आगे चल कर एक विशिष्ट स्थान के विषय में नायक से सुल्तान ने प्रश्न किया? नायक ने उत्तर दिया आ गहे राह। सुल्तान ने उस स्थान को आगहेराह कहा जाने की इच्छा प्रकट की। इस प्रकार संभव है कि आगरा उच्चारण

परिवर्तन का ही परिणाम है।[13] सिकंदर लोधी ने उस स्थान को पसंद किया। सिकंदर लोधी के इस कथन को आगरा के नामकरण का आधार मानना सही नहीं है। क्योंकि लगभग सिकंदर के समय से 450 वर्ष पूर्व महमूद गजनवी के पोत्र महमूद के दरबारी कवि मसूद सअद बिन सलमान ने अपने कसीदों में शुद्ध वर्तमान आगरा नाम का उल्लेख किया था। उसने आगरा के एक प्राचीन बड़े किले का वर्णन भी किया है। उस किले पर राजा जयपाल का अधिकार था। महमूद गजनबी के पौत्र महमूद ने आगरा किले पर आक्रमण किया तथा भयंकर युद्ध के बाद विजय प्राप्त की और इसी विजय प्राप्ति की प्रशंसा में सलमान ने कसीदे लिखे। अधिकतर एक कसीदे में से केवल एक में ही आगरा का उल्लेख मिलता है। इस प्रकार सिकंदर से 450 वर्ष पूर्व भी बी आगरा शब्द का उल्लेख मिलता है। साथ ही आगरा की राजनैतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वत्ता का पता चलता है। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के पुस्तकालय में दीवान–मसूद–सअद सलमान जिसका प्रकथन हैरी ने लिखा है। यह दीवान ईरान में छपा है।

7. आगरा दिल्ली मार्ग पर कठीम के पास परशुराम जी का मंदिर है। मंदिर के ही आसपास के क्षेत्र में परशुराम के पूर्वज अंगीरा शब्द से आगरा का नामकरण बताया जाता है। लेकिन परशुराम के पूर्वजों का इस क्षेत्र में निवास करना संदिग्ध है।[14]

नामकरण संबंधी उपरोक्त सभी विचारों की अपेक्षा सबसे तर्कपूर्ण विचार यह प्रतीत होता है कि आगरा, शब्द अग्रवन या अरगलपुर से निकला है। अग्र तथा अर्गल में बड़ी घनिष्ठा है। दोनों का अर्थ आगे सामने पहले तथा सीमांत क्षेत्र निकलता है।

इतिहास की छानबीन यह निश्चित करती है कि बृजमंडल जब प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति के चरम शिखर पर था, उस समय आगरा जो अरगलपुर या अग्रवन था राजनैतिक सामरिक दृष्टिकोण से अपना विशेष महत्त्व रखता था। किसी भी दुर्ग, महल, हवेली या घर का मुख्य प्रवेश द्वार। सुरक्षा की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण होता है। यह बात पूर्ण रूप से स्वाभाविक तथा व्यावहारिक भी है।

इन्हीं तथ्यों को आधार मानकर आगरा की उत्तरी विधान सभा से विधायक जगन प्रसाद गर्ग ने सीएम को पत्र लिखकर शहर का नाम बदलने की मांग की। उन्होंने लिखा है आप कहीं भी आगरा नाम की जांच करें। इस की क्या प्रासंगिकता है? उन्होंने इतिहास का हवाला देते हुए कहा कि आगरा पहले अग्रवन हुआ करता था। हालांकि बाद में मुगल शासकों ने इसे बदलकर अकबराबाद और बाद में आगरा कर दिया। यहाँ पहले जंगल हुआ करता था। और अग्रवाल समुदाय के लोग रहते थे। हालांकि जब मुगल यहाँ आए तो उन्होंने इस जगह का नाम बदल दिया। तो नाम आगरावन या आग्रवन होना चाहिए। जगन प्रसाद गर्ग ने कहा।[15]

आगरा नाम पर मंथन चल रहा है। शासन ने डॉ भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय से इस संदर्भ के प्रस्ताव पर साक्ष्य मांगे हैं। साक्ष्य को लेकर इतिहास विभाग में मंथन चल रहा है। आगरा का नाम अंगिरा अरगलपुर या फिर अग्रवन के रूप में प्रयोग किया जाए। विद्वानों ने कहा गजेटियर में अग्रवन नाम का उल्लेख है। महाभारत से पूर्व आगरा को अग्रवन या अग्रबाण कहा जाता था। आगरा का संबंध ऋषि अंगिरा से भी है। जो 1000 ईसा पूर्व हुए थे। तौलमी पहला व्यक्ति है जिसने आगरा शब्द का प्रयोग किया।

अतः आगरा का वास्तविक नाम क्या है, इस पर शोध कार्य व मंथन अभी भी चल रहा है।

लिखित साक्षियों के आधार पर आगरा की वास्तविक नींव सिकंदर लोधी द्वारा। सन 1505 ईस्वी में रखी गई, यह 16 वीं शताब्दी में बयाना सरकार के अंतर्गत। एक मुख्य परगना था।

आगरा में विदेशी पर्यटकों का आना सिकंदर के समय से ही शुरू हो गया था। सुल्तान सिकंदर के समय आगरा में बहुत सी इमारतों का निर्माण हुआ। किंतु वर्तमान में सिकंदरा के समीप बारादरी को छोड़कर सब नष्ट हो चुकी है। सिकंदर के समय से ही आगरा में अरब और फारस के यात्रियों का आगमन आरंभ हो चुका था। सुल्तान ने आगरा और दिल्ली दोनों ही स्थानों से चांदी के टंके सामान रूप से जारी किए।[16]

सिकंदर लोधी के उत्तराधिकारी सुल्तान इब्राहिम लोधी के समय में भी आगरा राजधानी रहा। 1526 ईस्वी में जब पानीपत के युद्ध में बाबर ने इब्राहिम लोधी को हराया, तो बाबर ने अपने पुत्र हुमायूँ को आगरा के महल पर कब्जा करने और खजाना लेने के लिए आगरा भेजा।

बाबर 1526 में आगरा आया और उसने भी इस स्थान को अपने राज्य की राजधानी बनाया।

आगरा नगर की स्थापना मुगलों के आगमन से पूर्व ही हो चुकी थी, किंतु वास्तविक रूप से आगरा नगर मुगलकाल में ही स्थापित हुआ। विशेष रूप से आगरा को वैभव प्रदान करने का कार्य अकबर ने किया। आगरा की भौगोलिक स्थिति के महत्त्व को समझते हुए इसे अपनी राजधानी बनाया और इसका नया नाम अकबराबाद रखा। इसका एक कृत्रिम नाम दार–उल–खिलाफत भी रखा गया।[17]

अकबर ने आगरा का पूर्ण रूप से पुनः निर्माण किया और इसे एक नियोजित रूप प्रदान किया। अकबर के द्वारा आगरा नगर का चुनाव उसकी भावी साम्राज्य विस्तार की योजनाओं को पूरा करने के लिए सही सिद्ध हुआ। आगरा सड़क मार्ग द्वारा जहाँ एक ओर उत्तर में पंजाब सिंध और अफगानिस्तान से संबंध था वहीं दूसरी और उत्तर पश्चिम में राजपुताना और गुजरात से जुड़ा हुआ था मालवा और दक्षिण के नगरों से जुड़ा हुआ था। आगरा नगर अंतर्राज्यीय और अंतरदेशीय व्यापार के लिए मध्यवर्ती केंद्र का काम करता था। आगरा नगर राजधानी के रूप में विकसित होने से पूर्व बहुत सी अन्य आवश्यकताएँ उत्पन्न हुई जोकि आसानी से व्यापार वाणिज्य के द्वारा पूरी की जा सकती थी मुगलकाल में यातायात का दूसरा साधन नदी मार्ग था। इसके लिए भी आगरा उपयुक्त था क्योंकि यह यमुना नदी के द्वारा दिल्ली से उत्तर में और पूर्व में इलाहाबाद होते हुए सोनारगाँव बंगाल तक से संबंधित था।

बादशाह अकबर ने आगरा में सिकंदर लोधी द्वारा बनवाए गए किले के स्थान पर वर्तमान आगरा के किले का निर्माण करवाया। अबुल फजल कहता है कि अकबर ने यमुना नदी के पूर्वी तट पर किले के निर्माण का आदेश भी दिया।

सिकंदर लोधी द्वारा बनवाए गए किले के खंभे अधिक समय होने के कारण कमजोर होकर गिर चूके थे इसके स्थान पर अकबर ने विशाल और मजबूत अभेद दुर्ग का निर्माण करवाया।

आगरा नगर का विकास अकबर के काल में तीव्र गति से हुआ। अतः नगर की चाहरदीवारी का कोई महत्त्व ही नहीं रह गया क्योंकि नगर की सीमाएं बहुत अधिक विस्तृत हो गई थी। संभव है कि यह दीवारें गिरा दी गई होंगी क्योंकि तत्कालीन यात्रियों ने इस दीवार का उल्लेख नहीं किया।

लेकिन अकबर द्वारा बनाए गए पॉच दरवाजों का अस्तित्व आज भी देखा जा सकता है की उनकी कतारबहुत ही लुभावना दृश्य उपस्थित करती है। यह लगभग छः कोष की दूरी तक फैली हुई थी। आगरा नगर की सीमा का विस्तार जिस तीव्र गति से हुआ, उसका उदाहरण नगर सीमा के प्रवेश द्वार की संख्या से लगता है। किंतु बाद के समय में 16 दरवाजों का उल्लेख मिलता है। इन दरवाजों में उत्तर पूर्व की ओर पूर्वी कश्मीरी दिल्ली, आलमगंज, फतेह मोहम्मद, छंगा मोदी, फाटक, पुत्तू फाटक, गूंग मन, छोटा ग्वालियर, कंस, बड़ा ग्वालियर और अमर सिंह द्वार है। इनमें से कुछ दरवाजे तो आज भी देखे जा सकते हैं, जिनमें दिल्ली दरवाजा और छंगा मोदी दरवाजा, कंस दरवाजा नूरी दरवाजा। अजमेरी दरवाजे का अस्तित्व 1886 ईसवी तक था। किंतु शाहगंज की सड़क बनाते समय वह गिरा दिया गया।

आगरा जनपद के इतिहास में सूर्यवंशीय हेमू का वर्णन ना करना इतिहास के साथ अन्याय होगा क्योंकि हेमू अंतिम हिंदू शासक था। हेमू एक अटूट आत्मविश्वास, अद्‌भुत संकल्प शक्ति का व्यक्ति था। इस्लाम शाह की मृत्यु के पश्चात मुबारिक खान दिल्ली के सिंहासन पर बैठा। उसने हेमू को पाठशाला का निरीक्षक नियुक्त किया। शाही सेवा करते–करते वह प्रधानमंत्री के पद पर पहुँच गया।

हुमायूँ के देहांत के बाद हेमू ने दिल्ली पर पूर्व अधिकार करने की योजना बनाई बिहार, बंगाल, इटावा, कालपी, ग्वालियर और अलवर की सफल विजय के पश्चात हेमू दिल्ली के लिए चल पड़ा। जब वह आगरा पहुंचा तो हाकिम शहर छोड़कर भाग गया जिससे वह आगरा पर कब्जा करने में सफल रहा तथा आगरा की ओर उत्साह पूर्वक कूच कर दिया। सर्वप्रथम उसका सामना बैरम खां की टुकड़ी से हुआ। किंतु बाद में पानीपत की लड़ाई 5 नवंबर 1556 ई. को हेमू की पराजय हुई।

अकबर हुमायूँ के पश्चात मुगलकाल की खोई हुई मान प्रतिष्ठा को प्राप्त करने में सफल रहा। आरंभ के वर्षों में अकबर का साम्राज्य पंजाब, दिल्ली, आगरा, अजमेर, ग्वालियर, जौनपुर तथा लखनऊ तक फैल गया। अकबर अब एक उपयुक्त स्थान की तलाश में था जिसे वह अपने भावी साम्राज्य की राजधानी बना सके और आगरा भी अपने भावी इतिहास को एक नवीन दिशा प्राप्त करने की बाट देख रहा था। जिस प्रकार अकबर ने आगरा को राजधानी बनाकर इसकी प्रतिष्ठा को स्थापित किया वह आगरा

नगर के लिए एक गौरव का विषय बना। यह वही नगर था जहाँ एक चौथाई शताब्दी पूर्व अकबर के पिता हुमायूँ ने बाबर को कोहिनूर हीरा भेंट दिया था। आगरा के दार–उल–खिलाफत का रूप प्रदान करने के निर्णय से शहर का स्वरूप ही बदल दिया। क्योंकि विश्व की समस्त सभ्यताओं में राजनैतिक राजधानी अपनी शान, बान और वैभव से एक अलग ही स्थान ग्रहण कर लेती है।

अकबर कला और वास्तुकला का महान सरक्षक था। महलों, मस्जिद, मकबरों किलो यहाँ तक कि नए शहर की योजना में गहरी रुचि लेता था। भवन निर्माण के संबंध में उसके अपने विचार होते थे जिसमें वह तुर्क, अफगान देसज शैलियों से मुक्त मिश्रण करता था। इसके परिणामस्वरूप तथा कथित वास्तुकला का विकास हुआ जो वस्तुतः उस युग की राष्ट्रीय भारतीय वास्तुकला थी। अकबर ने सार्वजनिक भवनों, उद्यानों, सड़कों, सराय तथा नहरों का निर्माण करने के लिए एक वृहद और लोक निर्माण विभाग की स्थापना की। अबुल फजल लिखते हैं महामहिम उत्कृष्ट इमारतों की योजना बनाते हैं और अपने दिल एवं दिमाग की कीर्ति को पत्थर और मिट्टी की पोशाक पहनाते हैं। इस प्रकार मजबूत किले बने हैं जो डरपोक लोगों की रक्षा करते हैं आपको भयभीत करते हैं और आज्ञाकारी लोगों को प्रसन्न करते हैं। शीत बरसात में प्रबल रक्षा करते हैं, हरम की शहजादियों और रानियों को आराम पहुंचाते हैं सांसारिक शक्ति के लिए आवश्यक गौरव के लिए लाभप्रद है। सर्वत्र सराय भी बनायी गयी है जो यात्रियों और बेचारे अजनबियों को राहत देते हैं। लोगों के फायदे और मिट्टी में सुधार के लिए तालाब और कुएं भी खोदे जा रहे हैं। विद्यालय और पूजा स्थान स्थापित किए जा रहे हैं और ज्ञान की विजयी मेहराब हाल ही में सजाई गई है।

अकबर के शासनकाल की शांति और खुशहाली के कारण लोग शहरों में जाकर बसने के लिए प्रोत्साहित हुए और निवास स्थानों की तीव्र नगरीकरण हुआ और उसके कारण राज्यों के लिए नगर योजना संबंधी नियम और विनियम बनाना आवश्यक हो गया।

अकबर अपनी राजधानी को अपने स्वभाव और रुचि के अनुरूप एक अलग प्रकार से नियोजित करना चाहता था, जिसकी मिसाल सात देशों में भी न मिले।

मुगलकाल में अनेक यात्रियों ने आगरा की यात्रा की। और उनके यात्रा वृतांत से महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। वाणिज्यिक दृष्टि से आगरा शुरू से ही पर्यटन का केंद्र रहा है।

आगरा नगर को विभिन्न क्षेत्रों में विभाजित कर विकसित किया गया। ये क्षेत्र तत्कालीन आगरा नगर की राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन की झलक प्रस्तुत करते थे। आगरा नगर में शाही आवास इसके अलावा कुलीन वर्ग के निवास भी यमुना के तट के दोनों ओर बनाए जाते थे। अबुल फजल के अनुसार यमुना के तट पर शाही आवास में काम करने वाले नौकरों को भी सुन्दर आवास प्रदान किए जाते थे।

आगरा नगर की प्रमुख विशेषता यह भी है कि अधिकतर आवासीय परिसर एवं शाही महलों का निर्माण यमुना नदी के दोनों तटों पर किया गया। यह मुगलकालीन वास्तुकला की एक विशेषता है। जहांगीर और शाहजहाँ के काल में भी यमुना नदी के तट पर अभिजन निवासी का बनाना जारी रहा। यही नहीं सार्वजनिक बाग, बगीचे, मकबरे, सराय और मस्जिदों का निर्माण भी किया गया। इस प्रकार नदी के किनारे घनी आबादी का विस्तार हुआ। इससे इस क्षेत्र में व्यापारियों की क्रियाकलापों का भी विस्तार हुआ।

फ्रांसिस को पेलसर्ट एक डच यात्री था। बादशाह जहांगीर के समय भारत आया। पेलसर्ट के विवरण के अनुसार। आगरा का यह स्थान नगर का सबसे व्यस्ततम क्षेत्र था। यहाँ दो कोस की दूरी तक सुन्दर व भव्य इमारतों व बगीचों की कतार है। नगर के बाहर से आने वाले व्यापारी इस स्थान तक वस्तुओं की आपूर्ति एक पंटून पुल द्वारा करते हैं।

आगरा ग्वालियर मार्ग पर भी नगर की सीमाएं बहुत विस्तृत थी। इस मार्ग पर वर्तमान में भी मुगल कालीन भवन जैसे सुलेमान शिकोह का महल, दारा शिकोह का महल स्थित है, रंग महल स्थित है। तख्त पहलवान उर्फ फिरोज खान का मकबरा भी इस मार्ग पर स्थित है।

इसी प्रकार आगरा और फतेहपुर सीकरी मार्ग भी अकबर के समय से ही नगर विकास की श्रेणी में आ गया था। अजमेरी गेट से आगे चार मील तक मुगलकालीन भवनों को आज भी देखा जा सकता है। अजमेरी गेट, जो कि वर्तमान में नहीं है इसके आगे जाकर एक कब्रगाह था जिसे उस समय मजादी की गुंबद कहा जाता था। आगरा और फतेहपुर सीकरी, आगरा और सिकंदरा अकबर के समय से ही आगरा नगर की सीमा के

विस्तार के अंतर्गत आ चुके थे। राल्फ फिंच ने इन दोनों मार्गो आगरा, फतेहपुर सीकरी और आगरा सिकंदरा पर स्थित व्यस्त बाजारों का वर्णन किया है।

राल्फ फिंच ने आगरा के बारे में क्या लिखा रॉल्फ 1588–1591 के बीच आगरा में रहा। वह पहला अंग्रेज यात्री है जिसने भारत के लोगों के बारे में उनकी वेशभूषा रीति रिवाज के बारे में लिखा है। उसने दूर दूर तक की यात्राएं की। चिटगांव पेगू और श्याम तक पहुंचा। उसके कथानुसार गुजरात का मुख्य शहर खंभात था। उसने आगरा को एक बड़ा शहर बताया। वह लिखता है इसमें पत्थर के मकान थे और इसकी गलिया काफी चौड़ी थी। फतेहपुर सीकरी आगरा से भी बड़ा था। ये दोनों शहर आकार में तब के लंदन से बड़े और अधिक आबादी वाले शहर थे।

अकबर के समय ईसाइयों के आवास नगर के बाहर बने हुए थे किंतु जहांगीर और शाहजहाँ के समय नगर के भीतर आ गए और इनमे भी विस्तार हुआ। आगरा में डच व्यापारी नील का कटरा और लोहा मंडी से व्यापार करते थे। इसका उल्लेख बर्नियर द्वारा किया गया है।

शाहगंज का क्षेत्र गिया सैयद के परिवार द्वारा विकसित किया गया था। कीन्स ने अपने विवरण में इस क्षेत्र के विकसित नील उद्योग का जिक्र किया है। उसका मानना है कि अकबर के समय से ही यह क्षेत्र घनी आबादी वाला और जनसाधारण के यहाँ आवास थे। घने रूप से विकसित बाजार, सराय और मंदिर मस्जिद भी मौजूद थे।

यमुना के दूसरे तट पर नूरजहाँ के आदेश द्वारा बनवाया गया। अति सुंदर एवं कलात्मक मकबरा है जो कि उसने अपने पिता एतमाद ओला उसकी याद में बनवाया था। इसके निर्माण में बहुत अधिक धनराशि व्यय हुई थी।

17वीं शताब्दी के अंत में आये विदेश यात्री जार्डन ने आगरा का वर्णन एक विशिष्ट मुगल शहर के रूप में किया है। जॉर्डन के अनुसार यह नदी की दिशा में 12 कोष लम्बा और लगभग 16 मील के बराबर है।

यूरोपीय यात्रियों ने आगरा की तत्कालीन जन संख्या 50,000 जबकि दिल्ली एवं लाहौर की 40,000 बताई है।

नगर की जनगणना करवाने का काम मुगलकाल में कोतवाल का था।

किंतु इस बात के साक्ष्य वर्तमान में उपलब्ध नहीं है। जहांगीर ने अपने आत्मकथा में आगरा के विस्तार की चर्चा की है। उसके अनुसार आगरा यमुना नदी के पश्चिमी तट पर सात कोष की परिधि में फैला था। यमुना के पूर्वी तट पर इसका विस्तार डेढ़ कोष की परिधि है।

आगरा की जनसंख्या का अनुमानित आकलन विदेशी यात्रियों के द्वारा पेरिस और लंदन की तुलना में किया गया। लंदन की जनसंख्या 16 वीं शताब्दी में लगभग 152–478 आंकी गई जबकि 1666 ई. में यह 460000 अनुमानित की गई। इस प्रकार पेरिस की जनसंख्या 1550 फीसदी में 200,000 और 17वीं सदी में लगभग 452600 अनुमानित की गई है।

रोल फिंच के अनुसार सोलहवीं सदी में आगरा की जनसंख्या लगभग दो लाख थी। मनरिक के अनुमान 1640 ईस्वी में आगरा की स्थानीय जनता ही लगभग 6 लाख 60 हजार थी। स्थानीय जनता के अलावा आगरा में विदेश यात्रियों के द्वारा आगरा की नब्बे सराय हमेशा भरी रहती थी।

अधिकांश शहर एक चारदीवारी में स्थित होते थे जिनमें एक या अधिक प्रवेश द्वार होते थे। शहर की प्रमुख जनसंख्या इन चारदीवारी के अंदर ही रहती थी। विस्तार से शहरी जनसंख्या इन दीवारों के बाहर तक बसने लगी थी। 17 वीं शताब्दी के अंत में, जॉन जॉर्डन का आगरा वर्णन एक विशिष्ट मुगल शहर के उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है।

''आगरा के विषय में जॉर्डन ने लिखा है कि यह शहर नदी की दिशा में 12 कोस लंबा है जो लगभग 16 मील के बराबर है। यह एक चारदीवारी में स्थित है, परंतु उप शहरी बस्ती शहर की दीवारों से लगी हुई थी। अगर दीवारों में प्रवेश द्वार न हो तो यह कह पाना मुश्किल होगा कि आप शहर की दीवारों के भीतर हो या बाहर।''

आगरा के विषय में बर्नियर लिखता है आगरा में ईसाई वर्ग के पादरियों का एक गिरजा और एक कॉलेज बना है। जहाँ वे पच्चीस या तीस ईसाई घराने के लड़कों को धार्मिक शिक्षा देते थे। आगरा के विषय में बर्नियर कहता है अकबर के समय ये इसे बसाया गया था जिसके कारण इसका नाम अकबराबाद रखा गया। इसके बाग बगीचे सराये आगरा आने वाले साहुकारों का निवास स्थान था। बर्नियर कहता है, राजाओं और अमीरों के बड़े बड़े मकान, अच्छी, अच्छी सराय और सर्वसाधारण के लिए बने हुए सुंदर और पक्के मकान भी यहाँ पर अधिक है। इसके चारों

ओर शहर बसा नही है। चार पांच बड़े बड़े बाजार हैं जिनमें व्यापारिक अधिक रहते हैं। बाकी सब छोटी छोटी गलियां है और बहुत भीड़भाड़ वाला शहर।

विभिन्न ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर यह स्वीकार किया जाता है कि आगरा महाभारत काल से प्राचीन शहर था और दिल्ली सल्तनत के शासक सिकन्दर ने 1504 में आगरा शहर की स्थापना कर इसे राजधानी बनाया सुल्तान की मृत्यु के बाद इब्राहिम लोदी ने आगरा पर शासन किया फिर 1526 बाबर के आगमन पर इस शहर की सुनहरी उम्र शुरु हुई। अकबर, जहॉगीर और शाहजहॉ के तहत मुगल राजधानी रहा। मुगल साम्राज्य के पतन के बाद, आगरा मराठों के प्रभाव में आया और 1803 में ब्रिटिश राज के हाथों गिरने से पूर्व आगरा कहा जाता था।

1835 में जब अंग्रेजों द्वारा आगरा की प्रेसीडेंसी की स्थापना हुई तो शहर की सीट बनवाई और केवल दो साल बाद यह 1837–38 ई. में आगरा में अकाल पड़ा।

1857 के भारतीय विद्रोह के दौरान पूरे भारत में ब्रिटिश शासन को धमकी दी गई थी, विद्रोह की खबर 11 मई को आगरा पहुॅची थी और 30 मई को मूल पैदल सेना, 44 वें और 67 वें रेजिमेन्ट की दो कंपनियों ने विद्रोह किया और दिल्ली चले गये सैनिकों को 15 जून को ग्वालियर पर विद्रोह करने के लिए मजबूर होना पडा। 3 जुलाई तक अंग्रेजों को किले में वापस जाने के लिए मजबूर होना पडा। दो दिन बाद सुचेता में एक छोटी ब्रिटिश सेना को पराजित कर दिया गया और उसे वापस लेने के लिए मजबूर कर दिया गया जिस कारण आगरा शहर बर्बाद हो गया। हालांकि विद्रोही दिल्ली चले गए जिसने अंग्रेजों को 8 जुलाई तक आदेश बहाल करने की अनुमति दी। विद्रोहियों के पराजित हाने के बाद 1947 ई तक ब्रिटिश शासन को फिर से शहर में सुरक्षित कर लिया गया था।[18]

आगरा धर्म का जन्मस्थान भी है क्योंकि अकबर का दीन–ए–इलाही राधास्वामी जिसके दुनिया भर में लगभग दो लाख अनुयायी है आगरा के पास जैन धर्म के शौरीपुर और 1000 ईसा पूर्व हिन्दू धर्म के रेनुका के साथ ऐतिहासिक संबंध है।

पर्यटन की अनिवार्य शर्तो को आगरा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पूरा करती है। इन्हें देखने व अनुभव करने के लिए वास्तव में पर्यटक आगरा आते है।

संदर्भ

1. अगारानामा संपादक सतीष चंद्र चतुर्वेदी पब्लिश नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया 2021
2. उपरोक्त
3. हिन्दुस्तान का इतिहास. विलयन हंटर 1881
4. दिल्ली सल्तनत 711 से 1526 तक – आशीवाद लाल श्रीवास्तव पेज 72
5. दैनिक जागरण रिपोर्ट आगरा पब्लिश 29 नवम्बर 2021
6. तुगलक कालीन भारत– अनुवाद सैरूयद अतहर अब्बास रिजवी भाग एक–संस्करण 1 जनवरी 2016
7. भक जान ए अफगानी–नियामतुल्ला पृष्ठ–35
8. आगरा व फतेहपुर सीकरी के ऐतिहासिक भवन– देवी दयाल माथुर–पब्लिश सर्वोदय प्रकाशन दिल्ली 1954 पृष्ठ–6
9. अर्ली ट्रैवल्स इन इण्डिया–विलियम फोस्अर पृष्ठ–182
10. पिक्टोरियल आगरा–प्रिया लाल एंड–संस पृष्ठ–18
11. आगरा गजेटियर सन 1884 पृष्ठ 575
12. बनारसीदास अर्धकथानक नाथूराम प्रेमी मुंबई–1957 पृष्ठ–42
13. नेमतुल्लाह तारीख–खाने. जहानी व मखजान–ए–अफगानी–सैय्यद मोहम्मद इमामुद़दीन ढाका भाग प्रथम–1960 पृष्ठ–105–96
14. जर्नल ऑफ हिस्टोरिकल रिसर्च भाग–13 पृष्ठ–105–96
15. एबीपी न्यूज 11 नवंबर दिन रविवार 2018
16. आर्कोलाजिकल सर्वे ऑफ इंडिया–कनिंघम भाग–7 पृष्ठ संख्या–260
17. आईन–ए–अकबरी–अबुल फजल अनुवाद ब्लोचमन द्वारा भाग–4 पृष्ठ–263
18. बहादुर शाह का मुकदमा–ख्वाजा हसन निजामी पृष्ठ–175–304